



कुरिंजि



वर्ष : 2021

22वाँ अंक



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी,
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई- 600 018



हिंदी दिवस 2020 समारोह के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश पढ़ते हुए श्रीमती नरेंद्र वी निखिला उपमहालेखाकार एएमजी - II



हिंदी दिवस - 2020 के अवसर पर हिंदी गृह पत्रिका "कुरिंजी" के 22वे अंक का विमोचन ।

कुरिंजि परिवार

मुख्य संरक्षक	विश्वनाथ सिंह जादौन महालेखाकार
मार्गदर्शक	जी.राजेन्द्रन वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
सलाहकार	पी.असोकन वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
संपादक मंडल	श्रीमती वी.चित्रा, हिंदी अधिकारी श्री अभिषेक, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री मोहन प्रकाश, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

अंक	बाईसवाँ
प्रकाशक	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी
मूल्य	राजभाषा के प्रति निष्ठा

टिप्पणी - संपादक मंडल को पत्रिका में छपी रचनाओं में व्यक्त रचनाकारों के विचार सहमत होना आवश्यक नहीं है ।
रचनाकार स्वयं अपनी रचनाओं की मौलिकता के लिए उत्तरदायी है ।

अनुक्रमणिका

क्र.स.	रचना के नाम	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	संरक्षक का सन्देश		4
2.	संपादक की कलम से		5
3.	एक नया शहर- एक नया अनुभव	नरेंद्र वी निखिला	8
4.	तिरुक्कुरल	पी.असोकन	9
5.	विशेष स्वतंत्रता प्राप्ति - अमृत महोत्सव	वी.चित्रा	14
6.	उपयुक्त समय	पवन कुमार	16
7.	एक फूल की कहानी	सुबश्री बाला	17
8.	चुटकुले	वी.राधा	18
9.	तनाव और चिड़चिड़ापन से बचने के टिप्स	वी.एम.बिंदु	20
10.	तमिल भाषा के बारे में रोचक तथ्य	जी.संगीता	21
11.	पर्यावरण बनाम विकास	चन्दन कुमार सिंह	22
12.	पुदुचेरी : सार्वभौमिक एकता का प्रतीक	गिरिश कुमार	24
13.	प्रकृति के नियम	वी.रुक्मणी	27
14.	बनारस	अभिषेक	28
15.	यह जादू है संगीत का !	व.सविता	29
16.	वैश्वीकरण और इसका भारतीय समाज पर प्रभाव	चन्दन कुमार सिंह	30
17.	शुक्रिया	व.सविता	32
18.	सफलता का रहस्य	वी.राधा	33
19.	कल्याण कक्ष गतिविधियाँ		35

संरक्षक का सन्देश



राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी के लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। किसी कार्यालय की पत्रिका वहाँ के कर्मिकों के भावों और विचारों का दर्पण होती है। इसके साथ-साथ ये राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन कामकाज करने की मनोभावना को उजागर करती हैं।

पत्रिका का प्रकाशन रचनाकारों के अतुलनीय योगदान से ही संभव होता है, अतः सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। मैं उन सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ जिनके अथक प्रयासों से “ कुरिंजि ” एक सफल गृह पत्रिका का रूप ले सकी है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि “कुरिंजि” का यह अंक भी पूर्व अंकों की भाँति हिंदी के विकास एवं प्रचार = प्रसार की दिशा में प्रेरणादायी सिद्ध होगा । पत्रिका की अनवरत प्रकाशन और उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

विश्वनाथ सिंह जादौन
महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II)



संपादक की कलम से

इस कार्यालय की गृह-पत्रिका "कुरिंजि" का बाईसवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्षानुभूति हो रही है । पत्रिका के माध्यम से कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सुअवसर मिलता है जिससे अनेक छिपी प्रतिभाएँ परिलक्षित हुई हैं जिन्होंने विभिन्न विषयों एवं पहलुओं पर सरल और सुबोध रूप से अपना विचार व्यक्त किया है ।

पत्रिका राजभाषा हिंदी के कार्यालयीन प्रयोग को उत्तरोत्तर विकासोन्मुखी दिशा प्रदर्शित करती हुई अपनी अनवरत् साहित्यिक यात्रा पर 22वें अंक की ओर अग्रसर है, इसके लिए हम आभारी हैं । आप सभी के अतुलनीय सहयोग से ही यह संभव हो सका है । कार्य की निरंतरता अपने आप में सफलता का प्रतीक है । हमें पूरी आस्था है कि हम अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे क्योंकि कवि कहते हैं कि " कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती है ।"

हिंदी साहित्य की विविध विधाएँ लेख, कहानी, व्यंग्य तथा सारगर्भित विषयों पर कविताएँ इस अंक के आकर्षण हैं । मैं इस अंक में योगदान देनेवाले सभी रचनाकारों को आभार प्रकट करती हूँ । आशा है कि इस अंक को भी पाठकगण रुचिकर और उपयोगी पायेंगे एवं पूर्व की भाँति पाठकों का स्नेह "कुरिंजि" को मिलता रहेगा ।

प्रबुद्ध पाठकों का सहयोग व उनकी प्रतिक्रिया इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने में अपनी अहम भूमिका अदा करती आ रही है, साथ ही अनुरोध है कि पत्रिका की समीक्षा कर अपने बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रियाओं से हमें प्रेरित करें ताकि हम आपके सुझावों/प्रतिक्रियाओं की ओर ध्यान देकर आगामी अंकों में पत्रिका को अति उपयोगी एवं कारगर बना सकें ।

वी.चित्रा,

हिंदी अधिकारी

महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा) - II महाराष्ट्र-मुंबई शाखा कार्यालय
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) - II MAHARASHTRA
BRANCH OFFICE MUMBAI

दूरभाष नं./Tel. No. : 022-22054022 / 022-22057360, फैक्स नं./Fax No. : 022-22092326
ई-मेल/E-mail: agcommu@Maharashtra@cag.gov.in

प्रसारन/लेख-III/हिन्दी पत्रिका/का 576/332

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालाह तेनामपेट,
चेन्नई-600018

03 MAR 2021
वी.एस.
08/03/2021

विषय: हिन्दी ई-पत्रिका "कुरिंजि" के 21वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय से हिन्दी ई-पत्रिका "कुरिंजि" के 21वें अंक की प्राप्ति प्राप्त हुई है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ जैसे पिताजी और मेरा बचपन, यादगार सफर, कोविड-19 का एक निम्न माध्यम का परिचय पर प्रभाव, इंटरनेट तथा बुटुकले लेख एवं सम्मान करो, जीवन का वित्तीय विवरण, कुछ अद्भुत तथ्य तथा कृष्ण अर्जुन संवाद कविताएँ अत्यंत प्रशंसनीय हैं। कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियों जैसे हिन्दी दिवस समारोह-2019 की झलकियाँ अति शोभायुक्त हैं। हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,
(मैरी व्ही. अलेक्झांडर)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/शासन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
UTTARAKHAND

पत्रिका हिन्दी/सामान्य-विधि/25/2018-2019/146
दिनांक: 04.03.2021

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, "लेखापरीक्षा भवन", 361, अण्णा सालाह, तेनामपेट,
चेन्नई - 600 018

विषय: राजभाषा पत्रिका "कुरिंजि" के 21वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका "कुरिंजि" के द्वितीय अंक की प्राप्ति प्राप्त हुई। तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का अंक बेहद जानकारीपूर्ण एवं आकर्षक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अति मनमोहक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सारगर्भित, उच्च स्तरीय एवं बेमिसाल हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगती हैं - "यादगार सफर", "सम्मान करो", "कृष्ण-अर्जुन संवाद" एवं "ग्लोबल वासिंग" आदि।

पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहायक होते हुए कर्मचारियों को अभिव्यक्ति का मंच भी उपलब्ध करवा रही हैं। आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका "कुरिंजि" राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी मौखिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका "कुरिंजि" की निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए पत्रिका समूह के संपादन एवं प्रकाशन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

महालेखाकार भवन, कौलागढ़, देहरादून - 248195 "Mahalekshakar Bhawan", Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone : 0135 - 2970870 फैक्स / Fax : 0135 - 2970871, ई-मेल / E-mail : agau@uttarakhand@cag.gov.in

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक
Date : 16.03.2021

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), तमिलनाडु,
"लेखापरीक्षा भवन", 361, अण्णा सालाह, तेनामपेट,
चेन्नई - 600018

विषय:- पत्रिका की पावती प्रेषित करने संबंधी।
संदर्भ:- आपका पत्र सं.मले.लेप-II/हि.अ./7-23/कुरिंजि/2020-21/105 दिनांक 01.03.2021

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह-पत्रिका "कुरिंजि" के इक्कीसवें (21) अंक वर्ष - 2020 की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रति भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं जानकारीपूर्ण लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पोस्ट - मंडार, जेरो प्वाइंट, रायपुर - 493 111 (छत्तीसगढ़)
Post - Mandhar, Zero Point, Raipur - 493 111 (Chhattisgarh)
फोन/Phone : 2582082, फैक्स/Fax : 2582505, ई-मेल/Email : agau@chhattisgarh@cag.gov.in

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड का कार्यालय
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), UTTARAKHAND

पत्रिका: 26/हिप0/2020-21/विभागीय पत्रिकाएं/पावती/439 दिनांक 25.03.2021

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-11)
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी "लेखापरीक्षा भवन",
361 अण्णा सालाह, तेनामपेट
चेन्नई-600018

विषय: वार्षिक गृह पत्रिका "कुरिंजि" वर्ष 2020 के 21वें अंक के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका "कुरिंजि" वर्ष 2020 का 21वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ विशेष रूप से श्री संजीव कुमार गिरि (डीओओ) की "सम्मान करो", सुश्री खुरादू कुमारी (डीओओ) की "कुछ अद्भुत तथ्य", सुश्री वीओ रूकमणि (वोलेपरीक्षा) की "जीवन का वित्तीय विवरण", सुश्री वीओ चित्रा (हिन्दी अधिकारी) की "नई शिक्षा नीति-2020 की मुख्य बातें" आदि सराहनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिन्दी प्रकोष्ठ

महालेखाकार भवन, कौलागढ़, देहरादून-248195 "Mahalekshakar Bhawan", Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Telephone: 2970866, 2970867; फैक्स / Fax: 2970859
Website: agau.cag.gov.in Email: agau@uttarakhand@cag.gov.in


प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय,
त्रिपुरा, अगरतला
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
TRIPURA, AGARTALA
पिन/ PIN - 799006
फ़ोन / Phone : 235-5494/235-0063
फैक्स / Fax - 0381-2350158/ 235-0423
ईमेल/ Email: agautripura@cag.gov.in
डि. ऑ. क. कुरिंजि/डि. ऑ. क. कुरिंजि/2020-21/105

सेवा में,
हिंदी अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, अण्णा सालई, चेन्नई
पिन - 600 018

विषय :- वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'कुरिंजि' के 21वें अंक के प्रेषण की प्रतिक्रिया भेजने बारे।
महोदय/महोदया,

आपके ई-मेल पत्र सं. मले. (लेप-II)/हि. अ. 7-23/ कुरिंजि/2020-21/105 के अंतर्गत आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'कुरिंजि' के 21वें अंक के ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई। एलएई धन्यवाद। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर प्रकृति के साक्षर्य में राष्ट्रीय पक्षी शेर की छवि अति सुभावनी प्रतीत हो रही है। पत्रिका में छायाचित्रों के माध्यम से दिया गया कवचोत्तरीन मतिविधियों का विवरण जानकारी साझा करने का अच्छा प्रयास है। पत्रिका में शामिल किए गए सभी रचनाएं शिक्षण के अक्षर हैं एक पाठकों के बीच प्रसारित करने में कामयाब होती दिखाई पड़ती हैं। विशेषतः 'कृष्ण-अर्जुन संवाद', 'प्रोबल वार्मिंग', 'बादलार सफर', 'रचनाएं सराहनीय एवं उत्पन्न की हैं।

आशा करता हूँ कि आपकी पत्रिका 'कुरिंजि' में प्रेषित पत्रों में प्रेषित से समाज को उत्कृष्ट बनाने में अपना योगदान देती रहेगी। 'कुरिंजि' परिवार को पत्रिका की उत्तरीय प्रगति एवं सुख संवाद के लिए 'जोमती' परिवार की ओर से शरीर शुभकामनाएं।

भवदीय,
व. लेखापरीक्षा अधिकारी (पत्रा.)


कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सेक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020
संख्या: हिंदी कक्ष/कुरिंजि/2020-21/201
दिनांक: 04.03.2021

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी,
लेखापरीक्षा भवन 361, अण्णा सालई, तेनामपेट,
चेन्नई-600 018

विषय: हिंदी गृह पत्रिका 'कुरिंजि' के 21वें अंक का प्रेषण।
महोदय,

आपके पत्र संख्या म.ले. (लेप-II)/हि. अ. 7-23/कुरिंजि/2020-21/105 दिनांक 01.03.2021 के द्वारा हिंदी गृह ई-पत्रिका 'कुरिंजि' के 21वें अंक की प्रति ई-मेल द्वारा प्राप्त हुई है। एलएई धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं अत्यंत क्विपु हैं। विशेष रूप से 'कृष्ण-अर्जुन संवाद', 'प्रोबल वार्मिंग', 'कोविड-19 का एक प्रियम मध्यम वर्गीय परिवार पर प्रभाव', 'कोरोनामायरस से जुड़े सवाल और उनके जवाब, जिन्हें जानना आपके लिए बेहद जरूरी', 'आई शिक्षा नीति-2020 की मुख्य बातें', तथा 'इंटरनेट' आदि रचनाएं अत्यंत सराहनीय एवं प्रसंख्य हैं। उत्कृष्ट संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की उत्तरीय प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)

डि. ऑ. क. कुरिंजि/2020-21/105


प्रधान महालेखाकार (ले. 0 एवं 00) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA
पत्रांक हिंदी कक्ष/लेखापत्रिका-जवाब/2020-21/140
दिनांक 03/03/2021

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई,
तेनामपेट, चेन्नई-600018.

विषय :- हिंदी गृह पत्रिका 'कुरिंजि' के 21वें अंक की ई-प्रति प्रेषण के संबंध में।
महोदय,

उपरोक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्र संख्या-मल0(लेप-II)/हि. अ. 7-23/कुरिंजि/2020-21/105 दिनांक 01/03/2021 एवं ईमेल दिनांक 01/03/2021 के द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'कुरिंजि' के चतुर्थ अंक की ई-प्रति सहाय्य प्राप्त हुई।

अंक पत्रिका और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं सुभावनी है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री संजीव कुमार निरि की रचना 'सम्मान करो', सुश्री सुशानु कुमारी की रचना 'कुछ अदभुत तथ्य' एवं श्री पी. अशोकन की रचना 'इंटरनेट' काफी रोचक, सराहनीय एवं जानकारी हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी,
(हिंदी कक्ष)


महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)-II, MAHARASHTRA, NAGPUR
संख्या. राजभाषा 8(II)/2020-21/आ. 290
दिनांक: 5/03/2021

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी,
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई,
तेनामपेट, चेन्नई-600018

विषय :- हिंदी ई-पत्रिका 'कुरिंजि' के 21 वें अंक पर प्रतिक्रिया संबंधी।
महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका 'कुरिंजि' के 21 वें अंक की प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं जानकारी हैं। विशेषकर श्री संजीव कुमार निरि, डी. ई. ओ. की कविता 'सम्मान करो', श्री पी. अशोकन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख 'इंटरनेट' तथा श्री सुधीर बर्गवाल, डी. ई. ओ. का लेख 'कोविड-19 का एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार पर प्रभाव' उत्कृष्ट संयोजन एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
(श्रीमती पी. एस. रमा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

डि. ऑ. क. कुरिंजि/2020-21/105



एक नया शहर- एक नया अनुभव

लगभग एक वर्ष पहले मेरा चेन्नई स्थानांतरण हुआ था। समाचार पत्रों में इस शहर में कोरोना के प्रभाव का पढ़ कर मन में थोड़ी हिचक और भय था। यह हिचक शायद केवल कोरोना के कारण नहीं था, सच कहूँ तो एक नए शहर में जाना, नए लोग, नया काम... यह सब मेरी विह्वलता के कारण थे। फिर वो दिन आया, जब मैं यहाँ आयी और बहुत जल्दी ही यह सभी धारणाएँ छटने लगी। कुछ वक्त गुजरने के बाद मुझे लगा कि यह शहर भी तो घर जैसा ही है- हाँ, बस मेरे अंदर के भुक्खड़ को कभी-कभी आंध्र के मिर्ची भाजी खाने की याद आती है। बीतते समय के साथ धीरे-धीरे काम और कार्यालय में भी समझ आयी। कभी-कभी जब अवसर मिला तो थोड़ा शहर भी घूमी। मेरिना बीच से कपिलेश्वर कोविल, पुदुचेरी और पोंगल की रौनक से दीपवाली की धूम तक इस शहर की अपनी एक जान है; एक हंसती-खिलखिलाती पहचान है। मैं ज्यादा तमिल तो नहीं बोलती, लेकिन आज एक वर्ष के बाद कोई मुझसे इस शहर के बारे में कुछ भी पूछे तो मैं कहूँगी - मुझे मद्रास पसंद है।

नरेंद्र वी निखिला

उप महालेखाकार /एएमजी-॥



तिरुक्कुरल

तिरुक्कुरल शास्त्रीय तमिल भाषा का मूलपाठ है जिसमें सात शब्दों के वेन्पा शैली के 1,330 छोटे दोहे, या कुरल शामिल हैं। मूलपाठ को क्रमशः पुण्य (अरम), धन (पोरुल) और प्रेम (इन्बम) पर सूत्र-रूप में शिक्षा के साथ तीन पुस्तकों में विभाजित किया गया है। यह आचार संहिता और नैतिकता पर सबसे महान रचनाओं में से एक माना जाता है एवं अपनी सार्वभौमिकता और धर्मनिरपेक्ष प्रकृति के लिए जाना जाता है। इस रचना का श्रेय वल्लुवर को दिया जाता है जिनका पूरा नाम तिरुवल्लुवर है। पाठ को 300 ईसा पूर्व से 5 वीं शताब्दी सीई तक विभिन्न रूप से दिनांकित किया गया है। पारंपरिक गणना इसे तीसरे संगम के अंतिम रचना के रूप में वर्णित किया जाता है लेकिन भाषाई विश्लेषण इंगित करता है कि इसकी रचना 450 से 500 ईसा काल की बाद की तारीख और संगम काल के बाद की गई थी।

कुरल को पारंपरिक रूप से "तमिल वेद" और "दिव्य पुस्तक" जैसे विशेषणों और वैकल्पिक शीर्षकों से प्रशंसा की जाती है। यह राजा, मंत्रियों, करों, न्याय, किलों जैसे सामाजिक और राजनीतिक विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करने के अलावा सच्चाई, आत्म-संयम, कृतज्ञता, आतिथ्य, दयालुता, पत्नी की भलाई, कर्तव्य, दान आदि पर भी प्रकाश डालता है। युद्ध, सेना की महानता और सैनिक का सम्मान, दुष्टों के लिए मौत की सजा, कृषि, शिक्षा, शराब और नशीले पदार्थों से परहेज। इसमें दोस्ती, प्रेम, यौन संबंध और घरेलू जीवन पर अध्याय भी शामिल हैं। इस पाठ ने उन सभी पूर्व धारणाओं की प्रभावी रूप से निंदा की जो संगम युग के दौरान आम थीं और तमिल भूमि के सांस्कृतिक मूल्यों को स्थायी रूप से फिर से परिभाषित किया।

महान संत तिरुवल्लुवर ने अपने विचारों को अति सौन्दर्य और कोमलता से छंदों में प्रस्तुत किया है। विचारों, भाषा और छंदों का संयोजन अद्वितीय है। इस लेख में प्रस्तुत सभी छंद मूल तमिल से अनुवाद हैं। बिना किसी अपवाद के प्रत्येक अनुवादक ने स्वीकार किया है कि तिरुवल्लुवर की सुंदर शैली और लय की भव्यता को अनुवाद में कैद करना संभव नहीं है। यह, सबसे अच्छा, मूल कार्य का एक पीला प्रतिबिंब हो सकता है। उनकी शिक्षाओं का तमिल लोगों के दिलों में कई पीढ़ियों से प्रमुख स्थान रहा है, और वे उनकी संस्कृति और जीवन का हिस्सा बन गए हैं। हो सकता है कि उन्होंने हमेशा संत का अनुसरण नहीं किया हो, लेकिन उन्होंने उन्हें प्यार किया, उनका पालन-पोषण किया और उनका सम्मान किया।

मैंने यहाँ अंग्रेजी और हिन्दी में अर्थ सहित मेरे पसंद के जीवनोपयोगी दस तिरुक्कुरल दिए हैं ।

1	<p>அதிகாரம் 4. அறன் வலியுறுத்தல், குறள் 34: மனத்துக்கண் மாசிலன் ஆதல் அனைத்தறன் ஆகுல நீர பிற விளக்கம்: ஒருவன் தன்மனதில் குற்றம் இல்லாதவானாக இருக்க வேண்டும். அறம் அவ்வளவே. மனத்தூய்மை இல்லாத மற்றவை ஆரவாரத் தன்மை உடையவை.</p>
	<p>अध्याय 4. धर्म पर आग्रह, कुरल :34 मन का होना मल रहित, इतना ही है धर्म । बाकी सब केवल रहे, ठाट-बाट के कर्म ॥ विवरण: मन में दोषरहित होना चाहिए। सद्गुण एक ही हैं: दूसरे जो शुद्ध नहीं हैं वे उतार-चढ़ाव भरे</p>
	<p>Let him who does virtuous deeds be of spotless mind; to that extent is virtue; all else is vain show</p>
2	<p>அதிகாரம் 7. மக்கட்பேறு, குறள் 69: ஈன்ற பொழுதின் பெரிதுவக்கும் தன்மகனைச் சான்றோன் எனக்கேட்ட தாய் விளக்கம்: தன் மகனை நற்பண்பு நிறைந்தவன் என பிறர் சொல்லக் கேள்வியுற்ற தாய், தான் அவனை பெற்றக் காலத்தில் உற்ற மகிழ்ச்சியை விடப் பெரிதும் மகிழ்வாள்.</p>
	<p>अध्याय 7. संतान-लाभ, कुरल :69. पुत्र जनन पर जो हुआ, उससे बढ़ आनन्द । माँ को हो जब वह सुने, महापुरुष निज नन्द ॥ विवरण: एक माँ जो दूसरों को यह कहते हुए सुनती है कि उसका बेटा गुणी है, वह उससे अधिक खुश होगी जब उसने उसे जन्म दिया था।</p>
	<p>The mother who hears her son called "a wise man" will rejoice more than she did at his birth.</p>
3	<p>அதிகாரம் 8. அன்புடைமை குறள் 72: அன்பிலார் எல்லாம் தமக்குரியர் அன்புடையார் என்பும் உரியர் பிறர்க்கு விளக்கம்: அன்பு இல்லாதவர் எல்லாப்பொருள்களையும் தமக்கே உரிமையாகக் கொண்டு வாழ்வார்: அன்பு உடையவர் தம் உடமையும் பிறர்க்கு உரிமையாக்கி வாழ்வர்</p>
	<p>अध्याय 8. प्रेम-भाव, कुरल:72 प्रेम-शून्य जन स्वार्थरत, साधें सब निज काम । प्रेमी अन्यो के लिये, त्यागें हड्डी-चाम ॥ विवरण: जिसके पास प्रेम नहीं है, वह सब वस्तुओं का स्वामी होकर जीवित रहेगा; जो प्रेम करता है, वह अपनी सम्पत्ति दूसरों के हाथ में ले कर जीवित रहेगा।</p>
	<p>Those who are destitute of love appropriate all they have to themselves; but those who possess love consider even their bones to belong to others.</p>

4	<p>அதிகாரம் 10. இனியவை கூறல், குறள் :100 இனிய உளவாக இன்னாத கூறல் கனிஇருப்பக் காய்கவரந் தற்று விளக்கம்: இனிய சொற்கள் இருக்கும் போது அவற்றை விட்டுக் கடுமையான சொற்களைக் கூறுதல் கனிகள் இருக்கும் போது அவற்றை விட்டு காய்களைப் பறித்துத் தின்பதைப் போன்றது.</p>
	<p>अध्याय 10. मधुर-भाषण, कुरल :100 रहते सुमधुर वचन के, कटु कहने की बान । यों ही पक्का छोड़ फल, कच्चा ग्रहण समान ॥ विवरण: कठोर शब्द कह रही है जब वहाँ शब्द बंद कर रहे हैं उन लोगों से पागल तोड़ जब वहाँ फल हैं की तरह है।</p>
	<p>To say disagreeable things when agreeable are at hand is like eating unripe fruit when there is ripe.</p>
5	<p>அதிகாரம் 13. அடக்கம் உடைமை, குறள் 125 எல்லார்க்கும் நன்றாம் பணிதல் அவருள்ளும் செல்வர்க்கே செல்வம் தகைத்து விளக்கம்: பணிவுடையவராக ஒழுகுதல்பொதுவாக எல்லோர்க்கும் நல்லதாகும்; அவர்களுள் சிறப்பாகச் செல்வர்க்கே மற்றொரு செல்வம் போன்றதாகும்.</p>
	<p>अध्याय 13. संयमशीलता, कुरल :125 संयम उत्तम वस्तु है, जन के लिये अशेष । वह भी धनिकों में रहे, तो वह धन सुविशेष ॥ विवरण: विनम्र होना आम तौर पर सभी के लिए अच्छा होता है; उनमें से सबसे अच्छा एक और खजाने की तरह है।</p>
	<p>Humility is good in all. But especially in the rich it is (the excellence of) higher rich.</p>
6	<p>அதிகாரம் 30. வாய்மை, குறள் 298 புறந்தூய்மை நீரா னமையு மகந்தூய்மை வாய்மையாற் காணப் படும் விளக்கம்: நீரில் குளிப்பதால் உடலின் அழுக்கு மட்டுமே நீங்கும்; மனம் அழுக்குப்படாமல் தூய்மையுடன் விளங்கிட, சொல்லிலும் செயலிலும் வாய்மை வேண்டும்</p>
	<p>अध्याय 30. सत्य, कुरल: 298 बाह्य-शुद्धता देह को, देता ही है तोय । अन्तः करण-विशुद्धता, प्रकट सत्य से जौय ॥ विवरण: पानी से नहाने से शरीर से गंदगी ही निकल जाती है; मन को अशुद्ध हुए बिना शुद्ध होने के लिए वचन और कर्म में वाक्पटु होना चाहिए</p>
	<p>External cleanliness is brought about by water; inner purity is evident in truthfulness.</p>
7	<p>அதிகாரம் 40, கல்வி, குறள் 400</p>

	<p>கேடில் விழுச்செல்வம் கல்வி யொருவற்கு மாடல்ல மற்றை யவை.</p> <p>விளக்கம்: கல்வி ஒன்றே அழிவற்ற செல்வமாகும் அதற்கொப்பான சிறந்த செல்வம் வேறு எதுவும் இல்லை</p>
	<p>अध्याय 40. शिक्षा, कुरल :400 शिक्षा-धन है मनुज हित, अक्षय और यथेष्ट । अन्य सभी संपत्तियाँ, होती हैं नहीं श्रेष्ठ ॥ विवरण: शिक्षा ही एकमात्र अमर धन है और इससे बेहतर कोई धन नहीं है</p>
	<p>Learning is the indestructible, and significant, wealth; other riches are not true wealth.</p>
8	<p>அதிகாரம் 51, தெரிந்துதெளிதல், குறள் 504 குணநாடிக் குற்றமு நாடி யவற்றுள் மிகைநாடி மிக்க கொளல். விளக்கம்: ஒருவரின் குணங்களையும், அவரது குறைகளையும் ஆராய்ந்து பார்த்து அவற்றில் மிகுதியாக இருப்பவை எவை என்பதைத் தெரிந்து அதன் பிறகு அவரைப் பற்றிய ஒரு தெளிவான முடிவுக்கு வரவேண்டும்</p>
	<p>अध्याय 51. परख कर विश्वास करना, कुरल :504 परख गुणों को फिर परख, दोषों को भी छान । उनमें बहुतायत परख, उससे कर पहचान ॥ विवरण: किसी व्यक्ति के गुणों और दोषों की जांच करें, पता करें कि बहुतायत में क्या है और फिर उसके बारे में एक स्पष्ट निष्कर्ष पर पहुंचें।</p>
	<p>Weigh the virtues and vices, discern which is more, and thus decide.</p>
9	<p>அதிகாரம் 60 : ஊக்கமுடைமை, குறள் 596 உள்ளுவ தெல்லாம் உயர்வுள்ளல் மற்றது தள்ளினுந் தள்ளாமை நீர்த்து. விளக்கம்: நினைப்பதெல்லாம் உயர்ந்த நினைப்பாகவே இருக்கவேண்டும் அது கைகூடாவிட்டாலும் அதற்காக அந்த நினைப்பை விடக்கூடாது</p>
	<p>अध्याय 60.उत्साहयुक्ता, कुरल :596 जो विचार मन में उठे, सब हों उच्च विचार । यद्यपि सिद्ध न उच्चता, विफल न वे सुविचार ॥ विवरण: सभी यह है कि सोचा जाना, उच्चतम सोचा होना चाहिए, भले ही यह है कि विचार के साथ हाथ में हाथ नहीं जाता</p>
	<p>Fervently aspire for the best; even if you fail, it is still as good as succeeding.</p>
10.	<p>அதிகாரம் 95. மருந்து, குறள் 596</p>

	<p>நோய்நாடி நோய்முதல் நாடி அதுதணிக்கும் வாய்நாடி வாய்ப்பச் செயல்.</p> <p>விளக்கம்: நோய் என்ன? நோய்க்கான காரணம் என்ன? நோய் தீர்க்கும் வழி என்ன? இவற்றை முறையாக ஆராய்ந்து சிகிச்சை செய்ய வேண்டும் (உடல் நோய்க்கு மட்டுமின்றிச் சமுதாய நோய்க்கும் இது பொருந்தும்)</p>
	<p>अध्याय 95. औषध कुरल : 949</p> <p>रोगी का वय, रोग का, काल तथा विस्तार । सोच समझकर वैद्य को, करना है उपचार ॥</p> <p>विवरण: रोग क्या है? रोग का कारण क्या है? इलाज क्या है? इन पर ठीक से शोध और उपचार करने की आवश्यकता है</p>
	<p>Diagnose the disease, detect its root cause, discern its cure and then act aptly.</p>

महर्षि शुद्धानंद भारती, अपने तिरुक्कुरल के अनुवाद में कहते हैं: "तिरुक्कुरल मानवता के लिए मार्गदर्शक प्रकाश है। यह व्यक्ति को नैतिक शुद्धता, शाश्वत ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान और पूर्ण समृद्धि, धन और स्वास्थ्य में जीने की ओर ले जाता है। यह परिवार के हर व्यक्ति, मां, बच्चों, शिक्षकों, कलाकारों, विद्वानों, शासकों और राजनेताओं के लिए एक भरोसेमंद दोस्त है।

नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में अपने इतिहास के दौरान विद्वानों और प्रभावशाली नेताओं द्वारा कुरल की व्यापक रूप से प्रशंसा की गई है। इनमें इलांगो, अडिगल, कंबर, लियो, टॉल्स्टॉय, महात्मा, गांधी, अल्बर्ट, थिट्ज़र, कॉन्स्टेंटियस, जोसेफ, बेस्ची, कार्ल, ग्रौल, जॉर्ज, यूग्लो, पोप, अलेक्जेंडर, पियाटिगोस्की, और यू हसी शामिल हैं। यह तमिल साहित्यिक कृतियों में सबसे अधिक अनूदित, सबसे अधिक उद्धृत और सबसे उपयुक्त बनी हुई है। पाठ का कम से कम 40 भारतीय और गैर-भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है, जो इसे सबसे अधिक अनुवादित प्राचीन कृतियों में से एक बनाता है। जब से यह 1812 में पहली बार छपा, तब से कुरल पाठ कभी भी आउट ऑफ प्रिंट नहीं रहा है। कुरल को एक उत्कृष्ट कृति और तमिल साहित्य के सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथों में से एक माना जाता है। तमिल लोगों और तमिलनाडु की सरकार ने लंबे समय से इस पाठ को श्रद्धा के साथ मनाया और बरकरार रखा है।

पी.असोकन

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन



स्वतंत्रता प्राप्ति - अमृत महोत्सव विशेष

सुप्रसिद्ध हिंदी कवि माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित " फूल की चाह अथवा पुष्प की अभिलाषा " कविता की ये पंक्तियाँ हमारे मन में देशभक्ति को कूट-कूट कर भर देती हैं और देश के लिए अपने प्राणत्याग करने वाले वीर सेनानियों को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए मन भाव विभोर हो उठता है। उक्त पंक्तियाँ हैं :-

" मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक

मातृभूमि पर शीघ्र चढ़ाने, जिस पथ पर जाए वीर अनेक "

भारत देश के कई वीर सपूतों के त्याग और बलिदान से हमने स्वतंत्रता हासिल किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारत देश के हर राज्य के स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

मैं इस लेख में स्वतंत्रता प्राप्ति के वैभव के आयोजन पर तमिलनाडु राज्य का क्या योगदान रहा, इस पर प्रकाश डालना चाहती हूँ।

अंग्रेजों ने जब भारत छोड़ने का निश्चय किया स्वतंत्रता प्राप्त करने का वैभव के आयोजन पर तमिलनाडु राज्य का क्या योगदान रहा, इस पर प्रकाश डालना चाहती हूँ।

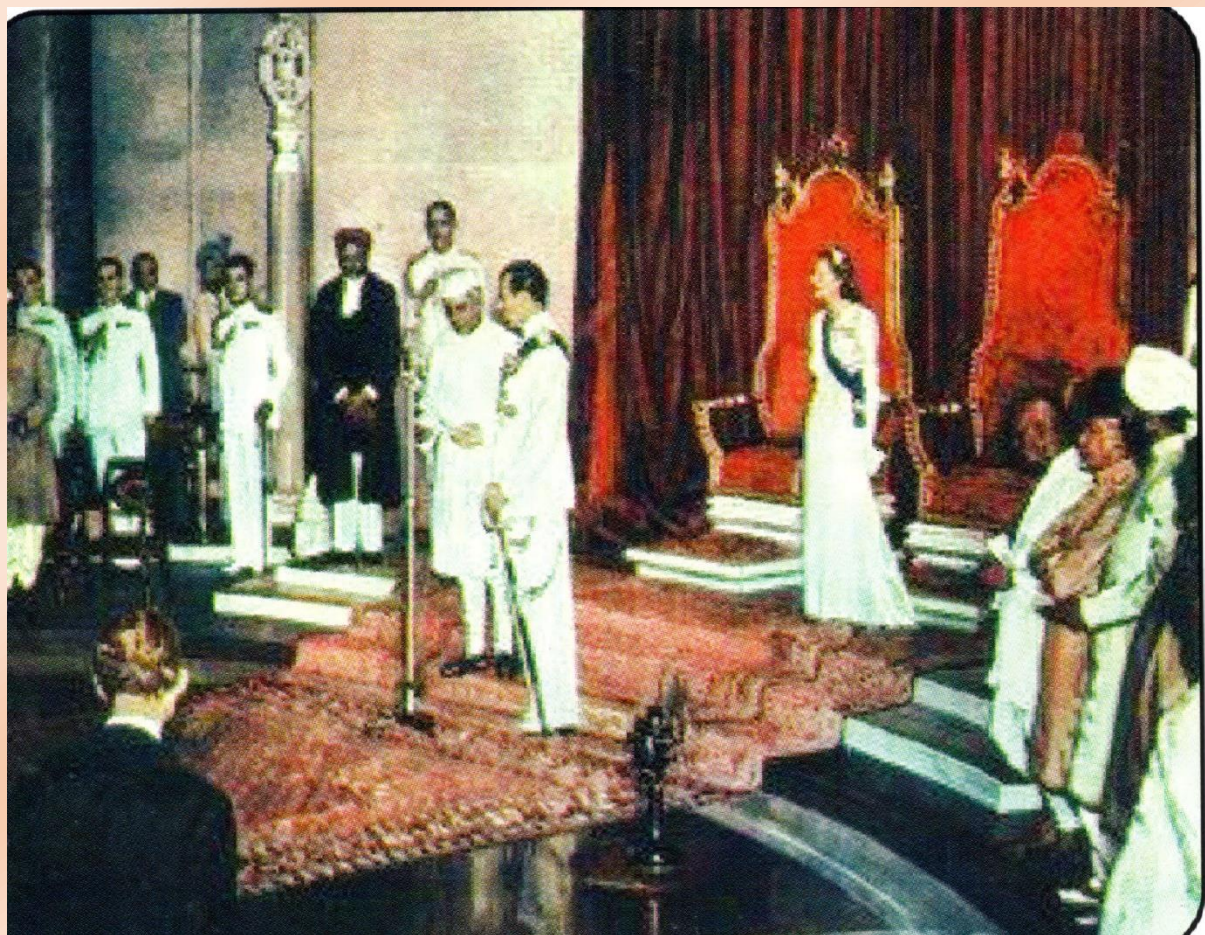
अंग्रेजों ने जब भारत छोड़ने का निश्चय किया स्वतंत्रता प्राप्त करने का वैभव का आयोजन किस तरह किया जाए के बारे में भारत के अंतिम वायसराय लॉर्ड माउंट बैटन ने नेहरूजी से विचार-विमर्श किया। नेहरूजी ने तत्काल कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने तमिलनाडु के दीर्घानुभवी नेता राजाजी से इसका हल निकालने का अनुरोध किया। तुरंत राजाजी से कहा, " आप चिंता मत कीजिए। तमिलनाडु में जब राजाओं का सत्ता का हस्तांतरण होता था, तब राजगुरु राजदंड को नए शासक को सौंपकर आशीर्वाद देते थे। इसी क्रम को अपनाते हुए हम भी किसी विदेशी के हाथ से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बजाय किसी महान संत के हाथों से राजदंड प्राप्त कर सत्ता का हस्तांतरण कर सकते हैं। "

नेहरूजी ने समय बहुत काम होने के कारण शीघ्र ही इसके लिए व्यवस्था करने को कहा। राजाजी ने तिरुवावडुतुरै आधीनम मठ के 20वें मठाधिपति गुरु महासान्निधानं पूज्य श्री अम्बलवान देसिकर से संपर्क कर सत्ता हस्तांतरण के समय किए जाने वाले धार्मिक संस्कारों को करवाने की व्यवस्था करने का अनुरोध किया।

आधीनम उस समय तेज बुखार से ग्रस्त थे। फिर भी उन्होंने उस समय चेन्नई शहर के मशहूर आभूषणों के दुकान से शैव चिन्ह उत्कीर्ण किया हुआ सोने की राजदंड बनवाकर देने का अनुरोध किया।

तत्पश्चात् राजाजी द्वारा प्रबंध किये गए अलग विमान में आधीनम ने अपने शिष्य एवं मठ के गुरु तिरुवदिगै कुमारस्वामी तम्बिरान को मठ के पुजारियों के साथ दिल्ली भेजा। 14 अगस्त 1947 को रात 11.45 बजे संत तिरुज्ञानसंबंधर द्वारा रचित तेवारम के कोलरुपतिगम (यह नव ग्रहों पर प्रायश्चित्त श्लोक है) के ग्यारहवां श्लोक की अंतिम पंक्ति “अड़ियारगल वानिल अरसालवर आणै नमदे” को गाकर अंत करते ही माउन्ट बैटन से कुमारस्वामी तंबिरान जिनका दूसरा नाम सडैसामी भी है ने राजदंड प्राप्त कर उस पर पुनीत जल छिड़ककर भगवान का नाम उच्चारण कर नेहरुजी के हाथ सौंपा । उस दिन लिया गया इस वैभव का फोटो आज भी तिरुवावडुदुरै आधीनम मठ में सुरक्षित रखा गया है और राजदंड जो नेहरुजी के हाथ दिया गया उनके पैतृक निवास आनंदभवन में है ।

वी.चित्रा
हिंदी अधिकारी





उपयुक्त समय

अमावस्या का दिन था। एक व्यक्ति उसी दिन समुद्र-स्नान करने के लिए गया, किन्तु स्नान करने के वजाय वह किनारे बैठा रहा। किसी ने पूछा, "स्नान करने आये हो तो किनारे पर क्यों बैठे हो ? स्नान कब करोगे ?

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि " इस समय समुद्र अशांत है। इसमें ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही हैं, जब लहरें बंद होगी और जब उपयुक्त समय आएगा तब मैं स्नान कर लूँगा। "

पूछने वाले को हँसी आ गयी। वह बोला, "भले आदमी ! समुद्र की लहरें क्या कभी रुकने वाली हैं ? ये तो आती रहेगी। समुद्र स्नान तो लहरों के थपेड़े सहकर ही करना पड़ता है, नहीं तो स्नान कभी नहीं हो सकता। "

यह हम सभी की बात है। हम सोचते हैं कि सभी प्रकार की अनुकूलताएं होगी, तभी अपनी संकल्पना के अनुरूप कोई सत्कर्म करेंगे। किन्तु सभी प्रकार की अनुकूलताएं जीवन में किसी को कभी नहीं मिलती। संसार तो समुद्र के समान है, जिसमें बाधा रूपी तरंगे तो हमेशा उठती ही रहेगी। एक परेशानी दूर होने पर दूसरी आएगी। जैसे एक व्यक्ति स्नान किए बिना रह गया, उसी प्रकार सभी प्रकार की अनुकूलता की राह देखने व्यक्ति से कभी सत्कर्म नहीं हो सकता।

सत्कर्म या किसी और शुभ कार्य के लिए उपयुक्त समय की राह मत देखो। प्रत्येक दिन और प्रत्येक क्षण सत्कर्म के लिए अनुकूल है। 'कोई परेशानी नहीं रहेगी तब सत्कर्म करूँगा '- ऐसा सोचना निरी मूर्खता है।

विघ्न के भय से जो कार्य की शुरुआत ही नहीं करते, वे निम्न कोटि के पुरुष हैं। कार्य का आरंभ करने के बाद विघ्न आने पर जो रुक जाते हैं, वे मध्यम पुरुष हैं। परन्तु कार्य के आरंभ से ही बार-बार विघ्न आने पर भी जो अपना निश्चित किया कार्य नहीं छोड़ते, वही उत्तम पुरुष होते हैं।

पवन कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षक, दावा अनुभाग



एक फूल की कहानी

एक दिन एक किसान ने एक फूल वाले पौधे का बीज बोया। कुछ दिनों के बाद वह किसान मर गया, जिसने बीज बोया, वह मर सकता है, परन्तु बीज नहीं। वह बीज जिन्दा ही था और उससे एक छोटा सा अंकुर निकला। लेकिन उस अंकुर देखभाल करने वाला कोई नहीं था। कई कीड़ों से उस अंकुरित बीज को खाने की कोशिश की। लेकिन उस बीज सभी कीड़ों से खुद को बचाकर एक सुन्दर पौधा बनने में कामयाब रहा। एक दिन भारी बारिश हो रही थी कि वह पौधा लगभग डूब गया। अगले दिन सुबह तक पौधा पानी में डूबा रहा, जब सूरज आया और लगभग सारा पानी निकल गया। दिन बीतते गए और पौधा बड़ा हो गया।

एक दिन पौधे ने एक छोटी फूल की कली दी। लेकिन वह कली भीषण गर्मी के कारन सूख गयी। कुछ दिनों के बाद पौधे ने एक और कली दी। लेकिन इस बार पौधा बहुत सावधान था कि कली न सूखे। उस कली से एक बड़ा, सुगन्धित लाल रंग का फूल निकला। उस फूल के रंग और सुगंध से वातावरण सुहावना हो गया।

उस रात तेज हवा चल रही थी और वह फूल इधर-उधर हिल रहा था। फूल ने अपनी सारी ऊर्जा के साथ मजबूत रहने की कोशिश की और हवा से जीत गयी।

फूल ने अब अपना जीवन जी लिया है। फूल धीरे-धीरे अपनी पंखुड़ियों को गिराने लगा। अंत में वह फूल पूरी तरह से मुरझा गया और उसकी रंगीन पंखुड़ियाँ भी खो गयीं। लेकिन वह फूल की मीठी महक अभी भी हवा में बह रही है और उस फूल की याद दिला रही है।

“हमारा जीवन भी ऐसे ही होना चाहिए। जिंदगी कितना भी मुश्किल है, अपनी खुशबू को कभी नहीं खोना चाहिए, उस फूल की तरह।”

एस.सुबश्रीबाला
ए.एम.जी.- III (रिपोर्टर्स)



चुटकुले

अध्यापक ने पूछा : बच्चों, एक साल में कितनी रात्रि होती है ?

रमेश : सर, 10 रात्रि।

अध्यापक : कैसे ?

रमेश : 9 नवरात्रि और 1 शिवरात्रि।

अध्यापक : शाबाश नालायक !

महिला (दुकानदार से) : भैया, सही दाम लगा लो ना, हमेशा आपके दूकान से ही सामान खरीदते हैं

दुकानदार : मैडम, कुछ तो भगवान से डरिये, आज ही पहला दिन है।

रश्मि : माँ, मई जीवन में आगे बढ़ने के लिए क्या करूँ ?

माँ : एक बड़ा पत्थर ले और सबसे पहले तुम्हारी मोबाइल फोड़

रश्मि : क्या

पत्नी गोलगप्पे खा रही थी।

20-25 खा लिए होंगे।

फिर उसने पति से पूछा ...

" 10 और खा लूँ ? "

पति बोला- " खा ले नागिन। खा ले ! "

पत्नी ने गुस्से में प्लेट फेंक दिया !

" नागिन किसको बोला ? "

पति : अरे ! मैंने कहा - " ना... गिन, खा ले ! "

टीचर (छात्रों से) : सेमेस्टर सिस्टम से क्या फायदा है, बताओ ?

छात्र : फायदा तो पता नहीं मैडम, पर बेइज्जती साल में दो बार हो जाती है !

छात्र : सर, एक कन्फ्यूजन है ?

अध्यापक : क्या बात है ?

छात्र : सर गाँधीजी ने कहा था - " आलस्य सबसे बड़ा शत्रु है "

अध्यापक : ठीक है ...

छात्र : नेहरूजी ने कहा था - " अपने शत्रु से प्रेम करो... "

अध्यापक : तो क्या ... ?

छात्र : आखिर किसकी सुने " बापू की या फिर चाचू की ...? "

अध्यापक : मेरी लाठी की

राधा वी

सहायक पर्यवेक्षक/ एएमजी-

हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है: -

राहुल सांकृत्यायन





तनाव और चिड़चिड़ापन से बचने के टिप्स

तनाव और चिड़चिड़ापन की समस्या अगर लंबे समय तक बनी रहे तो यह जीवन और सेहत दोनों के लिए नकारात्मक परिणाम देती है। मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. सबीउल्लाह सैयद के मुताबिक तनाव और चिड़चिड़ापन की समस्या से बचने के लिए इन बातों का पालन करना चाहिए।

- ❖ शराब और स्मोकिंग से दूरी बनाने पर ऐसी समस्या में फायदा मिलता है। ज्यादातर लोगों में यह देखा गया है कि वह तनाव और चिड़चिड़ेपन की समस्या की वजह से स्मोकिंग और शराब की लत लगा बैठते हैं। यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहद नुकसानदायक होता है। तनाव और चिड़चिड़ेपन की स्थिति में शराब और स्मोकिंग से दूरी बना लेनी चाहिए।
- ❖ कॉफी और कैफीन युक्त चीजों का सेवन कम करने से तनाव और चिड़चिड़ेपन की समस्या में फायदा मिलता है। लोगों के अंदर यह भ्रम है कि तनाव और चिड़चिड़ापन होने पर कॉफी का सेवन राहत दे सकता है लेकिन ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। तनाव और चिड़चिड़ेपन की स्थिति में कॉफी या कैफीन युक्त पदार्थों के सेवन का नकारात्मक परिणाम कुछ समय बाद दिखाई देता है। इसलिए तनाव और चिड़चिड़ापन की स्थिति में इन चीजों के सेवन से परहेज कर लेना चाहिए।
- ❖ ऐसी स्थिति में कल या भविष्य की अधिक चिंता भी लोगों की समस्या का कारण बनता है। तनाव या चिड़चिड़ापन से बचने के लिए भविष्य की अत्यधिक चिंता करना नुकसानदायक हो सकता है। तनाव और चिड़चिड़ापन के प्रमुख कारण भी आने वाले भविष्य की अत्यधिक चिंता करना ही है। जीवन में आगे क्या होगा इस बात को लेकर सोचने से कोई फायदा नहीं है। वर्तमान में जीने से तनाव और चिड़चिड़ापन की समस्या से बचा जा सकता है।
- ❖ नकारात्मक परिस्थिति और नकारात्मक विचारों से दूरी बनाने से चिंता, तनाव और चिड़चिड़ेपन की समस्या से बचने में फायदा मिलता है। जीवन में नकारात्मक विचार सिर्फ समस्या पैदा कर सकते हैं, इसलिए ऐसी परिस्थिति, विचार और नकारात्मक लोगों की संगति से बचना चाहिए।
- ❖ नियमित रूप से व्यायाम और संतुलित भोजन शरीर के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं। चिंता, तनाव या चिड़चिड़ेपन की स्थिति में भी नियमित रूप से एक्सरसाइज करने से फायदा मिलता है। मन को शांत और दिमाग को स्थिर रखने के लिए नियमित रूप से कुछ समय व्यायाम जरूर करना चाहिए।

वी.एम.बिंदु

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/दावा



तमिल भाषा के बारे में रोचक तथ्य

तमिल भाषा के बारे में कुछ तथ्य का उल्लेख नीचे दिया गया है -

1. " तमिल " ही पहली बोली जानेवाली भाषा है। यह दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे लम्बे समय तक जीवित रहनेवाली शास्त्रीय भाषा है जो अभी भी अपने मूल रूप में उपयोग में है।
2. " तमिल " की साक्षरता 80.3 % है जो राष्ट्रीय औसत 74.04 % से बहुत अधिक है। पुरातत्त्वविदों ने " अगस्त्यम " नामक एक तमिल साहित्य की खोज की है, जिसे लगभग 1500 ई.पू. से पहले अगस्त्य मामुनिवर द्वारा लिखा गया माना जाता है। इसने तमिल के सबसे पुराने साहित्य को बदल दिया है जिसे पहले थोलकाप्पियम कहा जाता था जो कि 500 ईसा पूर्व के आसपास कहीं बनाया गया था और यह भी पाया गया है कि कुछ विद्वानों के अनुसार तमिल का सबसे पुराना साहित्य " संगम साहित्य " है।
3. यह भी एक तथ्य रहा है कि तमिल के अधिकांश शब्द अपने स्वयं के हैं और कोई अन्य भाषा यह नहीं कह सकती कि तमिल के शब्द कॉपी किये गए हैं या अन्य भाषाओं पर निर्भर है।
4. संस्कृत को छोड़कर सभी द्रविड (Dravidian) भाषाएँ तमिल से ही बनी हैं और तमिल और संस्कृत के अधिकांश शब्द अंग्रजी जैसी अन्य भाषाओं को उधार देते रहे हैं।
5. यह पचा पाना कठिन है कि इस दुनिया में तमिल का जन्म कब हुआ था, यह अभी भी अज्ञात है।
6. तमिल ऐसी भाषा है जिसमें लगभग 30,000 से अधिक साहित्य हैं।
7. तमिल और हिन्दू धर्म सबसे पुरानी बंधुआ संस्कृति है जो 500 साल से भी अधिक पुरानी है। यह भी अनुमान लगाया गया है की लगभग 5000 वर्षों से पहले भगवान् शिव की पूजा की जाती थी और शोधकर्ताओं ने इसका प्रमाण अफगानिस्तान और कुछ उत्तरी देश जैसे स्थानों में पाया है, जिसमें कहा गया है कि वहाँ भी तमिल का अभ्यास किया जाता था।
8. यहूदियों (Jews) की भाषा " हिब्रू " तमिल से ली गयी है। यह बेबीलोनियों की असुर भाषा थी।
9. पहला संगम तत्कालीन मदुरै शहर में मुख्यालय था, इसे 89 राजाओं के उत्तराधिकारी द्वारा संरक्षित किया था और 4,400 वर्षों की अखंड अवधि के लिए जीवित रहा, उस समय के दौरान इसने कविताओं और साहित्य के विशाल संग्रह को मंजूरी दी।

ये कुछ आश्चर्यजनक तथ्य हैं जो मुझे पता है। इतना ही नहीं, और भी चौंकानेवाले तथ्य हैं।

जी.संगीता

सहायक पर्यवेक्षक/प्रशासन



पर्यावरण बनाम विकास

पर्यावरण संरक्षण और विकास को अक्सर अलग-अलग, यहाँ तक कि कई बार एक दूसरे का विरोधी भी समझा जाता है। इस तेजी से बदलती दुनिया के सामने आज जो कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं, उनमें पर्यावरणीय संकट सबसे महत्वपूर्ण है। इस समस्या ने मानवीय अस्तित्व को संकट में डाल दिया है। मौजूदा विकास की गति और स्वरूप ने पर्यावरणीय संसाधनों के ऊपर भारी दबाव डाला है। पर्यावरण और विकास के मौलिक अवधारणा का अंतर्द्वंद्व अब स्पष्ट रूप से सामने है।

वर्तमान में सम्पूर्ण उद्योग-धंधों का विस्तार प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित ईंधनों पर टिका है। विकास के इस नमूने के कारण दुनिया के सामने ग्लोबल वार्मिंग की समस्या खड़ी हो गयी है। ग्लेशियर और ध्रुवों पर मौजूदा बर्फ पिघल रही है। नई औद्योगिक परियोजनाओं के लिए जंगलों को कटा जा रहा है। औद्योगीकरण की वर्तमान प्रक्रिया ने एक तरफ इंसानी जीवन को बेहतर तो जरूर किया है लेकिन दूसरी तरफ इसका प्रभाव मानव सभ्यता की जड़ अर्थात प्रकृति पर भी पड़ा है।

पृथ्वी पर मौजूदा संसाधन सीमित हैं। ऐसे में बढ़ती जनसंख्या और उसके साथ जुड़ी उपभोक्ता दर भी एक बड़ी समस्या है। पृथ्वी एक ऐसा पात्र है, जिसमें से हम निकल तो सकते हैं, लेकिन उसमें कुछ डाल नहीं सकते हैं। यानि उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन अत्यधिक इस्तेमाल होने से समाप्ति की कगार पर पहुँच गए हैं। विकसित देशों और विकासशील देशों के बीच हो रही बहस ने जनसंख्या और उपभोक्ता दर के बिच विरोधाभास को उजागर किया है।

अतः अगर देखा जाए तो सतत् विकास जिस संगठित सिद्धांत की ओर इशारा करता है, वह समाज एवं अर्थव्यवस्था को अपनी सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिकी तंत्र की मजबूती पर ही बल देता है। यह एक ऐसी व्यवस्था को प्रोत्साहित करता है जहाँ प्राकृतिक संसाधनों की अखंडता और स्थिरता को प्रभावित किये बिना मानवीय आवश्यकता को पूरा किया जाता है। अतः सतत् विकास का तात्पर्य ऐसे विकास से है जिसके अंतर्गत वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने आने वाली पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता नहीं किया जाता है। अतः यह स्पष्ट है कि पर्यावरण संरक्षण और मानवीय विकास न केवल पूरक है बल्कि एक दूसरे के बिना अधूरे भी हैं।

विकास और पर्यावरण को एक साथ लाने के लिए सबसे जरूरी पहलू है, नीति-निर्धारकों की इच्छाशक्ति। इच्छाशक्ति के अभाव में यह देखा गया है कि कई परियोजनाओं को बिना पर्यावरणीय

मूल्यांकन के ही पारित कर दिया जाता है। इस तरह इसका प्रभाव पर्यावरण के संतुलन पर नाकारात्मक हो जाता है। अगर परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान करने से पहले सभी सम्बंधित पक्षों को ध्यान में रखा जाए तो निश्चित ही पर्यावरण को होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि, पर्यावरण और विकास के बीच संतुलन स्थापित करना अत्यधिक आवश्यक है। इस संतुलन को स्थापित करने के लिए सरकारी नीतियों का प्रभावी अनुपालन, संरक्षण की भावना, परियोजनाओं के अभिविन्यास में पर्यावरण को उचित महत्व देना और तकनीक का सही इस्तेमाल अत्यधिक आवश्यक है।

चन्दन कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
पुदुचेरी पार्टी / लेखापरीक्षा -II





पुदुचेरी : सार्वभौमिक एकता का प्रतीक

पुदुचेरी भारत का एक केंद्र शासित प्रदेश है जो दक्षिण भारत के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है और बंगाल की खाड़ी कोरोमंडल तट स्थित है। पुदुचेरी चार अलग-अलग (बिना जुड़े) जिलों से मिलकर बना है। कराईकल पुदुचेरी से 150 किमी की दूरी पर पूर्वी तट पर स्थित है। माहे केरल राज्य से घिरा हुआ है और यानम आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले के पास स्थित है। एक पौराणिक कथा के अनुसार, पुदुचेरी को वेदपुरी के नाम से जाना जाता था और यहां के मंदिरों में शिवजी का नाम वेदपुरीश्वर है। इस स्थान को पूज्य ऋषि संत अगस्त्य का निवास का निवास भी माना जाता है।

1947-1950 में, सर मोर्टिमर व्हीलर 1945 और जीन-मैरी कैसल ने पुदुचेरी के अरीकेमेडु में पुरातात्विक खुदाई की। साइट की पहचान पोडॉक के बंदरगाह के रूप में की गई। उत्खनन में एम्फोरा, एरेटिन वेयर, रोमन लैंप, कांच के बने पदार्थ, कांच और पत्थर के मोती और रत्न पाए गए, जिससे पता चला कि पुदुचेरी का अस्तित्व 1 ईसवी के आसपास का है। पुरातत्वविदों ने इन सभी साक्ष्यों को पांडिचेरी संग्रहालय में सुरक्षित रखा है। पल्लव वंश ने 4 ईस्वी में शासन किया, उसके बाद विभिन्न दक्षिणी राजवंशों जैसे चोल, पांड्य, विजयनगर राजाओं और बाद में मदुरै सल्तनत ने शासन किया। पुदुचेरी ने पुर्तगाली, डच, अंग्रेजी और फ्रेंच का ध्यान आकर्षित किया। 1673 में पुदुचेरी फ्रांसीसी शासन के अधीन आ गया और उसके बाद ब्रिटिश और फ्रांसीसी के बीच लड़ाई का स्थल बन गया। पुदुचेरी ने 300 वर्षों तक फ्रांसीसी भारत की राजधानी के रूप में कार्य किया। भारतीय संघ में फ्रांसीसी भारतीय क्षेत्रों का वास्तविक हस्तांतरण 1 नवंबर 1954 को हुआ और और इसे केंद्र शासित प्रदेश पांडिचेरी के रूप में स्थापित किया गया। 2006 में पांडिचेरी का नाम बदलकर पुदुचेरी कर दिया गया, जिसका तमिल भाषा में अर्थ है 'नया गाँव'।

पुदुचेरी की जलवायु उष्णकटिबंधीय आर्द्र और शुष्क है। 1,244,464 जनसंख्या वाले इस प्रदेश में तमिल, तेलुगु, मलयालम, और फ्रेंच आधिकारिक भाषाएं हैं। तमिल, मलयालम और तेलुगु को अंग्रेजी और फ्रेंच के साथ-साथ संबंधित क्षेत्रों के स्कूलों में पढ़ाया जाता है। देश के बाकी हिस्सों की तुलना में यहाँ की जनसंख्या उच्च शिक्षित है (साक्षरता दर - 86.5 %)। यहां कई प्रमुख शैक्षणिक संस्थान हैं, जैसे पुदुचेरी इंजीनियरिंग कॉलेज, पुदुचेरी विश्वविद्यालय, इंदिरा गाँधी मेडिकल कॉलेज और अनुसन्धान संस्थान, राजीव गाँधी पशु चिकित्सा शिक्षा और अनुसन्धान संस्थान, श्री अरविंदो इंटरनेशनल सेंटर ऑफ़ एजुकेशन, विवेकानंद कॉलेज, भारतीय प्रबंधन संस्थान, आचार्य शिक्षा मंदिर, शारदा गंगाधरन कॉलेज। यहां दूर-दूर से लोग तरह-तरह के कोर्स करने आते हैं। पुदुचेरी घूमने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च तक

है। इस दौरान शहर का तापमान 15 से 30 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है। तटीय इलाकों में इन दिनों बड़ी संख्या में लोग घूमने आते हैं। पुदुचेरी में प्रोमेनेड बीच (गौबर्ट एवेन्यू) भारत के सबसे स्वच्छ समुद्र तटों में से एक है और इसे ब्लू फ्लैग प्रमाणन के लिए चुना गया है। इस समुद्र तट पर पर्यटक शाम के समय वॉलीबॉल खेलना, टहलना, स्केटिंग, योग और तैराकी जैसी गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। इस समुद्र तट के आसपास कई आकर्षक स्थान हैं जैसे फ्रेंच वॉर मेमोरियल, स्टैच्यू ऑफ जॉन ऑफ आर्क, हेरिटेज टाउन हॉल, स्टैच्यू ऑफ महात्मा गाँधी, चिल्ड्रन पार्क और डुप्लेक्स स्टैच्यू 19वीं सेंचुरी लाइट हाउस, अरबिंदो आश्रम, आई मंडपम, फ्रेंच वाणिज्य दूतावास विधान सभा, पांडिचेरी संग्रहालय और फ्रेंच इंस्टीट्यूट ऑफ पांडिचेरी आदि। इसी तरह पैराडाइज बीच में फोटोग्राफी, वाटर स्पोर्ट्स के साथ-साथ स्वादिष्ट खाने का मजा लिया जा सकता है। यहां के लोग पैराडाइज बीच से जुड़े चुननंबर बैंकवाटर रिजॉर्ट में सूर्योदय का आकर्षक नजारा देखना पसंद करते हैं जहां झील और समुद्र का मिलन देख सकते हैं। यहां बोटिंग सुविधा भी उपलब्ध है। सेरेनिटी बीच, कोट्टाकुप्पम को हनीमून स्पॉट के रूप में जाना जाता है। अगर आप बीच की रेत पर लेटकर शांति से धूप सेंकना चाहते हैं तो यह बीच आपके लिए स्वर्ग से समान है।

ऑरोविल (भोर का शहर) जिसे 'यूनिवर्सल टाउन ' के रूप में भी जाना जाता है। इसकी स्थापना 1968 में अरबिंदो की शिष्या मीरा अल्फासा ने की थी। राष्ट्रीयता को भूलकर दुनिया भर के लोग यहां रहते हैं। वर्तमान में इस टाउनशिप में 195 से अधिक देशों के लगभग 2,800 आधिकारिक निवासी हैं। इस जगह पर ऑरोविल मंदिर और समुद्र तट भी है जो लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। इन सबके अलावा, शहर में एस्टरी झील है और इसे ओसुडु पक्षी अभयारण्य के रूप में जाना जाता है। यह एक मानव निर्मित झील है, जिसे एशिया के महत्वपूर्ण आर्द्रभूमि में से एक माना जाता है, यहां वर्षभर प्रवासी पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों का वास रहता है। इसे 2008 में एक पक्षी अभयारण्य घोषित किया गया था। बॉटनिकल गार्डन, पांडिचेरी में विभिन्न प्रकार के विदेशी पौधों के साथ-साथ एक मछली घर भी है। यह आगन्तुकों और छात्रों के समूहों को विज्ञान के बारे में उत्साहित करने के लिए लाइव प्रदर्शन और प्रयोग करने के लिए जाना जाता है। इसके अलावा अगर आप शहर घूमने की योजना बना रहे हैं तो राज निवास, भारती पार्क, आश्रम डाइनिंग रूम, रोमन रोलैंड लाइब्रेरी आदि जैसे कुछ विरासत स्थलों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।

हिन्दू, ईसाई, मुस्लिम, जैन, सिख, और बौद्ध धर्म के लोग यहां सौहार्दपूर्वक रहते हैं। सभी धर्मों के लोग अपने त्योहारों को बहुत धूमधाम से मानते हैं। यहां पोंगल, मासीमगम, गुड फ्राइडे, अक्षय तृतीया और वेस्टाइल डे आदि त्योहार प्रसिद्ध हैं। हिन्दू मंदिरों में अरुलमिगु मनकुला विनयगर देवस्थानम (गणेश मंदिर), वेदपुरेश्वर मंदिर, कनिनगा परमेश्वरी मंदिर, कामाक्षी अम्मन मंदिर (दुर्गा मंदिर), वरदराज पेरुमल मंदिर, वर्धराजा पदपुरेश्वर मंदिर, थिरुकामेश्वर और संगाझुन्नीर अम्मन मंदिर शामिल हैं।

चिदंबरम शहर जो पुदुचेरी से 63 किमी की दूरी पर स्थित है, भगवान नटराज मंदिर और रथ उत्सव के लिए प्रसिद्ध है। इस स्थान पर कई राजवंशों जैसे चोल, पांड्य, विजयनगर शासकों, मराठों और अंग्रेजों द्वारा भी शासन किया गया था।

मुसलमानों के लिए, जामिया मस्जिद (मौला सैयुलबाम की दरगाह), मीरान, खुतबा और मुल्ला मुहम्मद मस्जिदें और ईसाइयों के लिए सेक्रेड हार्ट जीसस की बेसिलिका, चर्च ऑफ लेडी ऑफ लोई, विलियानूर, चर्च ऑफ लेडी ऑफ गुड हेल्थ, अरियाकुप्पम, कैपुचिन चर्च, रिउ हमारी लेडी ऑफ एंजल्स का डुमास चर्च, डुमास स्ट्रीट और चर्च ऑफ एसेम्प्सन नेलिटोपो पूजा के लिए प्रसिद्ध हैं।

पर्यटन के लिए आए लेकिन यहां का स्थानीय खाना न खाये, ऐसा कैसे हो सकता है ? फ्रेंच भोजन का प्रभाव यहां के खाने में देखने को मिलता है, जो लोगों को बहुत भाता है। पुदुचेरी के मुख्य व्यंजन हैं इडली, बड़ा, डोसा, पोंगल, वेजिटेबल करी, नारियल करी, सोया डोसा, इटैलियन बेक्ड बीन, असद, तंदूरी आलू और स्टफ्ड गोभी। खाने के अलावा पर्यटक वाइन पीना पसंद करते हैं जो हमारे देश के अन्य पर्यटन स्थलों की तुलना में सस्ते दर पर खरीदी जा सकती हैं।

लॉस्पेट, पांडिचेरी हवाई अड्डे देश के कुछ प्रमुख शहरों से उड़ान द्वारा जुड़ा हुआ है। इसके अलावा चेन्नई हवाई अड्डे भी पुदुचेरी से केवल 160 किमी की दूरी पर है। इसके अलावा, पुदुचेरी प्रमुख शहरों से सड़क के माध्यम से और कुछ गंतव्यों से रेल नेटवर्क के माध्यम से जुड़ा हुआ है। स्थानीय परिवहन अत्यंत सुविधाजनक है। मोटरसाइकिल या कार भी आसानी से किराए पर ली जा सकती है। टैक्सी और साइकल ऑटो भी यहां उचित दरों पर उपलब्ध हैं। जिसके परिणामस्वरूप पर्यटक थोड़े वक्त में ही पुदुचेरी के अधिकांश दार्शनिक स्थल देख सकते हैं।

पुदुचेरी अपने प्राचीन समुद्र तटों और परिदृश्य के कारन दक्षिण में एक पसंदीदा पर्यटक स्थल के रूप में उभरा है। पर्यटक इस स्थान से एक इकाई के रूप में जुड़े हैं और जीवन में कम से कम एक बार इस स्थान की यात्रा करना चाहते हैं। दूसरी ओर पर्यटन क्षेत्र के विकास के साथ-साथ सरकार को राजस्व प्राप्त होता है, जिससे रोजगार के अवसर सुनिश्चित होते हैं।

गिरिश कुमार

डीईओ/ शाखा कार्यालय- पुदुचेरी





प्रकृति के नियम

हम जो खाना कहते हैं, उसे पचाना पड़ता है और फिर 24 घंटे में शरीर से बाहर फेंक देना पड़ता है, नहीं तो हम बीमार पड़ जाएंगे।

हम जो पानी पीते हैं, वह शरीर में जाकर 4 घंटे में निकल जाता है, नहीं तो हम बीमार पड़ जाएंगे।

जिस हवा में हम साँस लेते हैं, उसे 1 मिनट में बाहर फेंकना पड़ता है, नहीं तो हम मर जाएंगे।

घृणा, क्रोध, ईर्ष्या, असुरक्षा जैसी नकारात्मक भावनाओं का क्या हम अपने शरीर में दिनों, महीनों, और वर्षों तक धारण करते रहते हैं।

यदि इन नकारात्मक भावनाओं को नियमित रूप से बाहर नहीं निकाला जाता है तो यह मनोदैहिक रोगों में बदल जाती है।

ध्यान, प्रार्थना और सबसे बढ़कर सद्भावना की मनोवृत्ति इन भावनाओं को दूर करने का सबसे सुरक्षित तरीका है।

वी.रुक्मणि

सहायक पर्यवेक्षक/ ए.एम.जी.- II

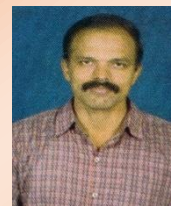
सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है, तो वो देवनागरी ही हो सकती है : जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर



बनारस

बनारस मुझे बहुत याद आता है
जब भी कभी देखता हूँ किसी नदी का घाट, सकरी गलियां
या किसी ठेले पर चाट
या फिर ठुमक कर गंगा की लहरों में चलते हुए नाव, जब भी देखता हूँ
मेरा मन फिर उन्हीं पुरानी यादों में खो जाता है
बनारस मुझे बहुत याद आता है।
जब देखता हूँ किताबें
छात्रों के चेहरे पर गंभीरता
पुस्तकालय जाते हुए विद्यार्थी
बूढ़े दरख्त
या किसी चाय की दुकान पर चर्चा
मेरे मन में मालवीय जी की बगिया का चित्र उतर आता है
बनारस मुझे बहुत याद आता है।
हर कण में ज्ञान बसा
और महादेव की छाया
उस पवित्र धरा से
मैं खुद को विरत नहीं कर पता हूँ
न जाने मेरा उससे क्या नाता है
बनारस मुझे बहुत याद आता है।

अभिषेक
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



यह जादू है संगीत का

यह संगीत होता क्या है ?

यह किसी छोटी सी मुस्कराहट की वजह

और मोती जैसे आँसुओं की वजह भी हो सकता है

किसी थका हुआ इंसान का सुकून

कई निद्राहीन रातों की समाधान

हमारे देश के रखवालों की राहत

और हिम्मत हारने वालों को देता है ताकत

क्योंकि संगीत से मिलता है फुर्सत

संगीत हर किसी की खुशियों से नचा सकता है

संगीत हर किसी को यादों को ताज़ा करके रुलाता है

बिन संगीत की दुनिया

बिन चाय पट्टी और बिन चीनी के चाय जैसे

सुबह सवेरे बिन आवाज़ के कोयल जैसे

सावन में बिन आवाज़ के बरसात जैसे

आखिर यह कैसा जादू है इस संगीत का ?

संगीत को दुनिया में हर कोई समझ सकता है

संगीत की कोई भाषा नहीं , ना ही कोई धर्म

आखिर में संगीत, संगीत होता है

चाहे वह किसी भी भाषा में हो,

हर हृद पार करता है हमें अपने आप से प्यार करना सिखाता है और हर किसी को दिल खोलकर इज़हार करना सिखाता है आखिर यह है जादुई चमत्कार संगीत का !

वी.सविता रोकड़िया/दावा



वैश्वीकरण और इसका भारतीय समाज पर प्रभाव

वैश्वीकरण एक आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और वैश्विक व्यवस्था है जिसमें बाजारी ताकतों का प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र पर देखा जा सकता है। वैश्वीकरण उदारीकरण की चरम अवस्था है। वैश्वीकरण ने एक तरफ आर्थिक विकास को गति प्रदान किया तो वहीं दूसरी तरफ स्थानीय संस्कृति और परम्परा पर विदेशी संस्कृतियों को थोपने का भी प्रयास किया है।

वर्तमान में भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का समग्र प्रभाव देखा जा सकता है। वैश्वीकरण के कारण भारत में विद्यमान आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आधुनिकीकरण की स्थिति ने लोगों के मध्य आत्मकेंद्रित भावना का विकास किया है। भारत की वेशभूषा, सृजनात्मक क्रियाकलाप, भाषागत प्राथमिकता, संगीत, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, सिनेमा के प्रति रुचि, अत्याधुनिक क्रियाकलापों को वरीयता, सामाजिक रीति-रिवाजों के प्रति विश्वास इत्यादि में वैश्वीकरण के प्रभाव को देखा जा सकता है।

वैश्वीकरण ने लोगो में ब्रांड को लेकर दौड़ और अनुपयोगी वस्तुओं के संग्रहण की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है। लोग महंगे ब्रांड का सामान खरीदने को अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ कर देखने लगे हैं। अतः इससे स्पष्ट है कि वैश्वीकरण के कारण लोग अपने नैसर्गिक गुणों और इच्छाओं के बजाए भौतिक वस्तुओं के एकत्रीकरण पर जोर दिया है।

भारत एक वैविध्यपूर्ण समाज है, जहाँ धर्म, जाति, क्षेत्र इत्यादि के आधार पर अनगिनत परम्परायें प्रचलित हैं। वैश्वीकरण के कारण भाषाई एवं सामुदायिक प्रतीक नष्ट होने लगे हैं तथा उनके स्थान पर एक समरूप भाषा, खान-पान, वेश-भूषा, रहन-सहन इत्यादि का विकास होता जा रहा है। अतः यह स्पष्ट है कि भारत की सदियों पुरानी सांस्कृतिक विरासत, वैश्वीकरण के कारण नष्ट हो रही है। संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार और फिर सूक्ष्म परिवार में बदलते जा रहे हैं।

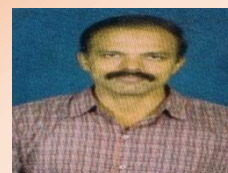
लेकिन दूसरी तरफ वैश्वीकरण ने तार्किकता, बौद्धिकता, धर्म निरपेक्षता इत्यादि का विकास भी किया है। इसने भारतीय युवाओं की सोच और प्राथमिकता बदली है। नई पीढ़ी धर्म, जाति, क्षेत्र, लिंग जैसे संकीर्ण विषयों से ऊपर उठकर आर्थिक और बौद्धिक विकास प्राप्त करने की ओर अग्रसर है। जाति प्रथा और जन्म के आधार पर भेदभाव समाप्त हो रहे हैं। वैश्वीकरण के कारण भौगोलिक दूरी का महत्व भी घटा है। एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने में समय की कम खपत के कारण लोगों का सामाजिक जुड़ाव बढ़ा भी है।

वैश्वीकरण से आर्थिक गतिविधियों में तेजी आई है। नई-नई कंपनियों के आने से रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। कई नए केंद्रों का विकास भी हुआ है। हालाँकि वैश्वीकरण से आर्थिक असमानता भी तेजी से बढ़ी है। किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी में ऊँचे पद पर कार्यरत व्यक्ति को लाखों का वेतन मिलता है। वहीं दूसरी ओर एक बड़े वर्ग को निर्धारित मजदूरी भी नहीं मिल पाती है। विकसित और विकासशील देशों के मध्य का अंतर घटने की बजाय, बढ़ता ही जा रहा है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि, वैश्वीकरण आधुनिक युग की ऐसी वास्तविकता है, जिससे मुँह नहीं मोड़ा जा सकता। वैश्वीकरण से फायदे हुए हैं तो नुकसान भी हुए हैं। लेकिन नुकसान की तुलना में फायदे अधिक हुए हैं। अब जरूरत है ऐसी नीतियों की, जिनसे वैश्वीकरण का लाभ जनमानस तक पहुँचे। वैश्वीकरण को पूर्णतः सफल तभी माना जाएगा, जब हर तबके का आदमी एक निश्चित स्तर की जीवनशैली जीने लगेगा।

चन्दन कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
पुदुचेरी पार्टी / लेखापरीक्षा -II





शुक्रिया

" शुक्रिया " एक ऐसा शब्द है जो लाखों, करोड़ों लोगों का दिल छू जाता है। एक छोटी सी शब्द एक बड़ी सी मुस्कुराहट की वजह बन सकती है और उनका दिन अच्छा बना देता है। हर किसी को शुक्रिया अदा करना बहुत जरूरी होता है। जिंदगी में यदि बहुत सारे संकट या समस्या हो, परन्तु इस कारण भगवान को शुक्रिया अदा करना न भूलें। मदद चाहे छोटा हो या बड़ा, मदद करने वालों को और हमेशा हमारे साथ देने वालों को शुक्रिया अदा बेशक करें। शुक्रिया अदा करने के लिए उम्र न देखें, चाहे छोटे हो या बड़े, जरूरत पड़ने पर किसी की सहायता सही समय पर करने वालों को शुक्रिया अदा करना आवश्यक हैं। शुक्रिया अदा करने में कोई भेद-भाव न करें और यदि कोई आपके गलती को सुधारने की कोशिश करे तो उन्हें भी शुक्रिया अदा करें। जिंदगी में हर चीज़ को हलके में न लें और सबसे मुख्य बात, अपने आप को भी शाबाशी दें और खुद को अपनी जिंदगी नेक तरह से जीने के लिए शुक्रिया अदा कीजिए। अपने माता-पिता को हमेशा उनकी आशीर्वाद आपको हमेशा देने के लिए और आपको इस दुनिया में खुशी-खुशी स्वागत करने के लिए उन्हें दिल से शुक्रिया अदा कीजिए। दूसरों से हमेशा मदद माँगने के साथ-साथ उनकी मदद करके अपने आप को शुक्रिया अदा के लायक बनाए रखें। नाश्ता करने से पहले आपको मष्ट करने की सुविधा मिलने के लिए शुक्रिया अदा कीजिए और आपके हर एक आवश्यकता को पूरा करने वालों को भी शुक्रिया अदा करें। शुक्रिया अदा करना बहुत जरूरी है और ' शुक्रिया ' शब्द एक है, परन्तु उसे कहने के कारण अनेक हो सकते हैं, उदहारण के लिए एक वहां चालक आपको सही समय पर सही सलामत आपकी मंजिल तक पहुँचाते हैं, इस लिए काम छोटा हो या बड़ा, शुक्रिया शब्द बहुत छोटा होता है लेकिन उसके पीछे एक बहुत महत्वपूर्ण अर्थ होता है।

" खुशी कृतज्ञता का सबसे सरल रूप है " यदि सभी को शुक्रिया अदा करना कभी न भूलें।

वी.सविता
रोकड़/दावा



सफलता का रहस्य

"सर्वश्रेष्ठ नवोदित कलाकर, 14 वर्षीय संजना को जाता है, जो एक अलग तरह से सक्षम लड़की है, जिसने अपने पैर की उँगलियों से एक सुन्दर दृश्य चित्रित किया है। संजना आपसे अनुरोध है कि 'हिन्दू युवा प्रतिभा- 2020' का प्रतिष्ठित पुरस्कार लेने के लिए मंच पर आए ", एम.सी. घोषणा कर रहा था। संजना पुरस्कार लेने के लिए मंच पर चली गयी, तालियाँ और तेज हो गयी, उनके गले में एक स्वर्ण पदक रखा गया, खुशी के आँसू उनके गालों पर लुढ़क गए।

"अब मैं संजना के माता-पिता से अनुरोध करता हूँ कि वे मंच पर आए और प्रमाण पत्र व नकद पुरस्कार स्वीकार करें ... एम.सी. की आवाज़ दूर से सुनी, क्योंकि संजना का दिमाग बीता हुआ कल की ओर बह गया था। "

दिसंबर की शाम ठंडी थी। संजना अपने अपार्टमेंट के सामने दोस्तों के साथ खेल रही थी, उनकी गेंद तारों से उलझ गई, वह गेंद को पकड़ने के लिए कूद गयी, परन्तु उसने एक बिजली तार को पकड़ लिया। वह मूर्च्छित हो गयी।

जब उसने अपनी आँखें खोली तो वह एक अस्पताल में थी, उसके दोनों हाथ पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए थे। जब उसने अपनी माँ से पूछा कि "क्या हुआ था?" तो उन्होंने बताया कि करंट के उसके हाथों से गुजर जाने के कारण उसके दोनों हाथ घायल हो गए थे। हाथों में गैंगरीन फैलना शुरू होने से डॉक्टर के पास उन्हें काटने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

संजना इस बुरी घटना को स्वीकार नहीं कर पा रही थी। कई सुधारात्मक और पुनः सुधारात्मक शल्य चिकित्सा हुई, वह अस्पताल में आठ महीने तक रही। डॉक्टरों ने अगले छः महीने के बाद की कृत्रिम हाथ लगाने का सुझाव दिया। वह बहुत दर्द में थी। वह पूरी तरह से दूसरों पर हमेशा निर्भर थी। ऐसी विकलांगता के साथ अपने जीवन को समायोजित करना उसके लिए आसान नहीं था। वह चाहती थी कि काश वह मर चुकी होती। वह बहुत क्रोधित, उदास और निराशा थी। इस दुःख का असर उसके स्वास्थ्य पर पड़ा।

संजना के माता-पिता अपनी बेटी का दर्द और दुःख नहीं देख पा रहे थे। वे उसे मशहूर थेरेपिस्ट के पास ले गए। थेरेपिस्ट ने उसकी उसकी परिस्थितियों को समझकर उसकी जीवन शैली को बदलने में मदद की। उन्होंने उसके दृष्टिकोण को अधिक सकारात्मक और यथार्थवादी तरीके से बदल दिया।

संजना के पास और कोई विकल्प नहीं था। केवल एक ही रास्ता था अपनी विकलांगता को स्वीकार कर आगे बढ़ना। थेरेपिस्ट की कई मुलाकातों के बाद संजना ने अपने लिए खेद महसूस करना बंद कर दिया था। यह सोचना शुरू कर दिया कि वह भविष्य में क्या करना चाहती है और कैसे? वह अपने असफलताओं को बदल कर सही कर सकती है।

संजना ने अपने पैरों का उपयोग करके पेंटिंग सीखने का फैसला किया। एक मशहूर कला-शिक्षक की मदद से उसने अपनी पैरों की उँगलियों से पेंटिंग करने का नया कौशल सीखना शुरू किया। उसने एक सप्ताह से अधिक समय तक अपने पैर की उँगलियों से पेंसिल और ब्रश उठाना सीखा, फिर धीरे-धीरे उसने स्ट्रोक बनाना शुरू कर दिया। शुरूआती दिनों में उससे एक भी स्ट्रोक सीधा नहीं होता था, फिर भी उनके कला शिक्षक ने बहुत सावधानी से सिखाया। उन्होंने रोज नई-नई तकनीक एवं बारीकियां सिखाया। जब संजना पेंटिंग छोड़ने का मन करती थी तब उसके कला शिक्षक हमेशा प्रोत्साहित करते थे और आत्मविश्वास भी बढ़ाते थे। वे यह भी कहते थे कि लक्ष्य तक पहुँचने के लिए कड़ी म्हणत करना आवश्यक है। संजना रोज आठ से नौ घंटे से अधिक समय तक अभ्यास करती थी। उनके अथक प्रयासों से उसे पेंटिंग में पारंगत बना दिया।

संजना इतनी कठिनाइयों को पार करने के बाद, दस महीने के भीतर आज " हिन्दू युवा प्रतिभा 2020 " प्रतियोगिता में हर दूसरे प्रतिभागी की तरह भाग लिया और प्रथम पुरस्कार जीत लिया। उसने यह साबित किया कि चोट न केवल चुनौतियों का सामना करने में मदद करती है बल्कि सफल बनने में भी मदद करती है।

एम.सी. ने संजना से अनुरोध किया कि वह अपनी विकलांगता पर काबू पाने और उसकी सफलता का राज के बारे में कुछ शब्द कहें। संजना ने जब अपना नाम सुना तो वह अपने पिछले दिनों की कड़वी यादों से बाहर निकली और कहने लगी कि

" विकलांगता सिर्फ शरीर की होती है दिमाग की नहीं। विकलांगता सफलता के लिए बाधा नहीं है। मेरी सफलता का राज कड़ी मेहनत है। मेरा एकमात्र सलाह है कि विकलांगता को स्वीकार करें, परिवार और दोस्तों के साथ हमेशा जुड़े रहे। अगर मेरे पास हाथ नहीं है तो क्या, भगवान ने इतने प्यारे माता-पिता, दोस्त और सलाहकार दिए हैं। भगवान ने मुझे दूसरा मौका दिया है, जिसका मैं पूरा उपयोग करूँगी और एक सफल जीवन जीऊँगी, धन्यवाद!

भीड़ से तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई दी। संजना के माता-पिता को अपनी बेटी की सफलता पर बहुत गर्व महसूस हुआ।

वी.राधा

सहायक पर्यवेक्षक/एमजी

कल्याण कक्ष गतिविधियाँ

- ❖ COVID-19 महामारी के कारण दिनांक 02.05.2020 को लेखा परीक्षा भवन भवन के लिए कीटाणुशोधन गतिविधियाँ की गई हैं, जिसके लिए कार्यालय प्रबंधन अनुभाग द्वारा आवश्यक व्यवस्था की गई। कल्याण कक्ष ने भी इस गतिविधि में सहायता की। इसके अलावा, सभी कार्य दिवसों के दौरान, सभी वाहनों को साफ किया गया है और इस कार्यालय के सभी अधिकारियों को थर्मल स्कैन और उपयुक्त रूप से साफ किया गया है।
- ❖ कोविड-19 महामारी के संबंध में निवारक उपाय के लिए, सभी तीन लेखा परीक्षा कार्यालयों के सभी स्टाफ सदस्यों को 06.05.2020, 08.05.2020, 11.05.2020 और 12.05.2020 को चार दिनों के लिए कबसुर कुड़िनीर (इम्युनिटी बूस्टर) वितरित किया गया।
- ❖ 'आतंकवाद विरोधी दिवस' की शपथ महालेखाकार (केन्द्रीय), प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) के कार्यालयों और महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा दिनांक 21.05.2020 को पूर्वाह्न 11.00 बजे संबंधित कार्यालय में सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए ली गई थी। शाखा कार्यालय, पुदुचेरी और शाखा कार्यालय, मदुरै के अधिकारियों/अधिकारियों ने अपने-अपने कार्यालयों में शपथ ली थी।
- ❖ महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के निर्देशानुसार, COVID-19 महामारी के संबंध में, निवारक उपाय और प्रतिरक्षा बूस्टर के रूप में, आर्सेनिक एल्बम - 30 (होम्योपैथी दवा) तीनों ऑडिट के सभी स्टाफ सदस्यों (परिवार के सदस्यों सहित) को वितरित किया गया था। कार्यालय। इसके अलावा, कल्याण सहायक ने उनके अनुरोध पर आरटीआई, चेन्नई के कार्यालय और एमएबी, चेन्नई के कार्यालय को होम्योपैथी दवा की आपूर्ति की व्यवस्था की है। इसके अलावा, कल्याण कक्ष ने आरए-ट्वार्ड बोर्ड और शाखा कार्यालय पांडिचेरी को होम्योपैथी दवा की आपूर्ति की व्यवस्था की है।
- ❖ COVID-19 के संबंध में वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन की सलाह के अनुसार इस कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के लाभ के लिए फिंगर पल्स ऑक्सीमीटर खरीदा गया। इस कार्यालय के कर्मचारी और अपनी नब्ज की जांच कराने के लिए कल्याण कक्ष में लगातार आ रहे हैं।

- ❖ वर्ष के दौरान सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों के लिए विदाई समारोह आयोजित किए गए ।
- ❖ दिनांक : 15.08.2020 को चौहत्तरवां स्वतंत्रता दिवस चेन्नई के कार्यालय मले (ले.व.ह) के लॉन में मनाया गया। श्री डी. जयशंकर,(भा.लेप.व ले से), महालेखाकार (ले व ह), चेन्नई ने प्रधान निदेशक (क्षे.प्र. सं) और महालेखाकार (लेखा परीक्षा II) की उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। कल्याण अधिकारी सहित कल्याण अधिकारी समारोह में शामिल हुए।
- ❖ 'सद्भावना दिवस' की शपथ महालेखाकार कार्यालय (केंद्रीय), प्रधान महालेखाकार कार्यालय (लेखापरीक्षा I) और कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा पूर्वाह्न 11.00 बजे ली गई थी। दिनांक 20.08.2020 को सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए संबंधित कार्यालय के अधिकारियों/अधिकारियों ने और शाखा कार्यालय, पुडुचेरी और शाखा कार्यालय, मदुरै के अधिकारियों ने अपने-अपने कार्यालयों में शपथ ली।
- ❖ कल्याण सहायक हमारे कार्यालय के कर्मचारियों को उपनगरीय ट्रेन में श्रमिक विशेष ट्रेन में यात्रा करने की अनुमति देने के लिए दक्षिण रेलवे कार्यालय के महानिदेशक और वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक दक्षिण रेलवे के पास गए। यह रेलवे अधिकारियों द्वारा स्वीकार किया गया है। दोनों कल्याण कक्षों द्वारा तीनों लेखा परीक्षा कार्यालयों के कर्मचारियों के अनुरोध पर रेलवे अनुमति पास के लिए बोनाफाइड जारी किया जा रहा है।
- ❖ 31 अक्टूबर 2019 को राष्ट्रीय एकता दिवस (राष्ट्रीय एकता दिवस) के संबंध में सभी अनुभागों को एक परिपत्र जारी किया गया था। दिनांक 29.10.2020 को पूर्वाह्न 10.30 बजे महानिदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपने संबंधित कार्यालय में सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए 'राष्ट्रीय एकता दिवस' की शपथ ली गई । शाखा कार्यालय, पुडुचेरी और शाखा कार्यालय, मदुरै के कर्मचारियों ने भी अपने-अपने कार्यालयों में शपथ ली।
- ❖ दिनांक 22.10.2020 को स्वेच्छा से सेवानिवृत्त हुई वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी श्रीमती जी. चंद्रकला का प्रथम तल सम्मेलन कक्ष में विदाई समारोह आयोजित किया गया।

- ❖ राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भाव फाउंडेशन (एनएफसीएच) सप्ताह इस वर्ष 19.11.2020 से 25.11.2020 तक मनाया गया और झंडा दिवस 25.11.2020 को मनाया गया। इस संबंध में दिनांक 07.12.2020 को सभी तीन लेखा परीक्षा कार्यालयों को परिपत्र जारी किया गया और कल्याण कक्ष के कर्मचारी एवं कल्याण सहायकों ने अनुभाग-वार दौरा किया और 22,000 / - रुपये की राशि एकत्र की और इसे 09.12.2020 को स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, तेनामपेट शाखा में नेशनल फाउंडेशन फॉर कम्युनल हार्मनी (एनएफसीएच), नई दिल्ली के खाते में भेज दिया गया ।
- ❖ कल्याण कक्ष द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, चेन्नई - 18 के निदेशक की सहायता से दिनांक 10.12.2020 को सातवीं मंजिल के मीटिंग हॉल में दो में स्वास्थ्य जागरूकता व्याख्यान सह पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन का आयोजन किया गया था। सत्र सुबह 11.00 बजे से दोपहर 12.00 बजे तक और दोपहर 03.00 बजे से शाम 04.00 बजे तक। तीन लेखापरीक्षा कार्यालयों के अधिकारियों के लिए जागरूकता भाषण और पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन बहुत उपयोगी था।
- ❖ दिनांक : 12.02.2021 को सातवीं मंजिल के सभागार में नकद पुरस्कार एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। महामारी काल में राज्य लोक स्वास्थ्य प्रयोगशाला द्वारा समर्पित एवं चुनौतीपूर्ण सेवा के सम्मान में समारोह में लोक स्वास्थ्य निदेशक का अभिनंदन किया गया।
- ❖ तीनों लेखापरीक्षा कार्यालयों के कर्मचारियों/अधिकारियों के लाभ के लिए कल्याण कक्ष द्वारा डाक जीवन बीमा जागरूकता अभियान और आधार पंजीकरण/अद्यतन की व्यवस्था 3 दिनों (17.02.2021 से 19.02.2021) तक की गई थी।
- ❖ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम के संबंध में 08.03.2021 को "प्रसिद्ध महिला अचीवर्स (भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय)" विषय पर सभी तीन लेखा परीक्षा कार्यालयों की महिला कर्मचारियों के लिए एक विशेष प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस संबंध में दिनांक 09.03.2021 को "चैलेंजर्स का चयन करें" जो कि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का विषय था, पर एक लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का आयोजन 7वीं मंजिल के मीटिंग हॉल में अपराह्न 03.30 बजे किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. आर. आशा रजनी, पशु चिकित्सा विज्ञान की प्रोफेसर (सेवानिवृत्त) द्वारा एक विचारोत्तेजक भाषण दिया गया। सोसायटी में महिलाओं की उपलब्धि पर और मुख्य अतिथि को

प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय) द्वारा सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि और प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (मध्य) द्वारा प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम और लेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

- ❖ कोविड-19 महामारी से बचाव के उपाय के रूप में कल्याण कक्ष द्वारा दिनांक 26.03.2021 (शुक्रवार) को सभी तीन लेखा परीक्षा कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों के टीकाकरण के लिए 7वीं मंजिल बैठक हॉल, लेखा परीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई - 18 में सुबह 10.00 बजे से ग्रेटर चेन्नई कॉरपोरेशन द्वारा एक टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया। भारत सरकार के आदेशों के अनुसार, केवल 45 से 60 वर्ष के आयु वर्ग के लिए टीकाकरण दिया गया था। लगभग 178 अधिकारियों/कर्मचारियों को टीका लगाया गया और वे लाभान्वित हुए।





वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा हिंदी के श्रेष्ठ कार्यावयन का शील्ड प्राप्त करते हुए
श्री.वाई.के.मुरुगेश लेखपरीक्षा अधिकारी / कानूनी कक्ष



हिंदी दिवस 2020 समारोह के अवसर पर धन्यवाद ज्ञापन देते हुए कार्यलय के हिंदी
अधिकारी श्रीमती वी.चित्रा

